International Journal of Applied Research 2016; 2(2): 07-09

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 07-09
www.allresearchjournal.com
Received: 05-12-2015
Accepted: 02-01-2016

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि.प्र.

Correspondence:
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि.प्र.

रीति कालीन गद्यसाहित्य

डॉ. शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य में रीति काल का विशेष महत्व है। इसे अलंकृत काल की भी संज्ञा दी गई है। 1 इस काल में प्रचुर पद्य रचना हुई, परन्तु गद्य रचना भी होने के कारण यह काल अधिक प्रसिद्ध हुआ। आदिकालीन एवं भक्तिकालीन गद्यसाहित्य की तुलना में इस काल का गद्यसाहित्य बहुत अधिक है। इस काल में अधिकतर गद्य साहित्य ब्रजभाषा और राजस्थानी में ही रचा गया। इसके अतिरिक्त खडी बोली, भोजपुरी, अवधी, आदि भाषाओं में भी गद्य–साहित्य लिखा जाने लगा था। इस काल का गद्यसाहित्य अनेक रूपों में रचित है,जिनमें वार्ता, टीका, टिप्पणी, प्रवचन, नाटक आदि प्रमुख हैं। धर्म, दर्शन, इतिहास, भूगोल, आदि इस गद्य के मुख्य विषय हैं। भाषा के आधार पर रीति कालीन गद्य–साहित्य को निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है–

1 व्रजभाषा में रचित गद्य–साहित्य
2 राजस्थानी भाषा में रचित गद्य–साहित्य
3 दक्खिनी हिन्दी में रचित गद्य–साहित्य
4 खड़ी बोली में रचित गद्य–साहित्य
5 अन्य उपभाषाओं, बोलियों, में रचित गद्य–साहित्य।

अब इनपर सविस्तार चर्चा की जाएगी, जो इस प्रकार है–

1. ब्रजभाषा में लिखित गद्य–साहित्य

रीतिकाल में ब्रजभाषा में गद्यसाहित्य मुख्यतः वार्ताओं, टीकाओं, आत्मचरित, वचनिका, वार्तिक, अनुवाद, संवाद, आदि रूपों में मिलता है। इस काल के ब्रज–गद्य के विषय मुख्यतः–धर्म, दर्शन, चिकित्सा, ज्योतिष, शकुनशास्त्र, गणित, इतिहास, भूगोल, अस्त्र, चित्रकारी आदि हैं।

वार्ता साहित्य में चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता अधिक प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त रीति कालीन ब्रजभाषा का गद्यसाहित्य सामाजिक, राजनीतिक, दार्शनिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वचनामृत साहित्य भी इसी गद्य साहित्य में लिखा गया है तथा गद्य की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। श्री कृष्ण भट्ट, कल्याणभट्ट, हरिराय आदि इस काल के प्रमुख वचनामृत साहित्यकार हैं। इस काल के प्रमुख वचनामृतों का विवरण इस प्रकार है जो गद्य में लिखे गए–

गुसाईंदामोदर दास संवार	वनपात्र
नित्य सेवा प्रकार	अट्ठाईस बैठक चरित्र
चौरासी बैठक चरित्र	धरुवार्ता

इसके अतिरिक्त गद्यसाहित्य में भावना संज्ञक टिप्पणीपरक गद्य साहित्य भी मिलता है– चौरासी वैष्णवन की भावना वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की भावना वार्ता, धरुवार्ता भावना आदि का विशेष महत्व है। इसी प्रकार ब्रजभूषण, अनन्यअली, ललित किशोरी, ललित मोहन, दामोदरस्वामी आदि लेखकों ने भी गद्यसाहित्य के विकास में अपना योगदान दिया। इस काल के ब्रजभाषा में रचित गद्यसाहित्य में वार्तासाहित्य का धार्मिक दृष्टि से महत्व अधिक है।

ब्रजभाषा के गद्यके विकास में उन्नीसवीं सदी में जिन गद्यकारों नें महत्वपूर्ण योगदान दिया उनमें मीनराजप्रधान, गुमानीराम कायस्थ, शिवचन्द्र, सुरतिमिश्र, लल्लूलालजी आदि प्रमुख हैं। इन लेखकों ने प्रौढ़ ब्रजभाषा के गद्य का परिमार्जित रूप प्रस्तुत किया है।

इस काल में गद्य में कुछ रचनाओं का अनुवाद भी हुआ, जिसकी भाषा ब्रज ही है। इन अनूदित ग्रन्थों में लल्लू लाल जी का राजनीति, कलवयनकथा, सेवाराम निसा कृत भागवत्, अज्ञात लेखक का सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, आदि ग्रंथों का नाम लिया जा सकता है।2

इस काल में वार्ता टीका इत्यादि के अतिरिक्त जिन ग्रंथों में टिप्पणी–परक गद्य का प्रयोग देखने को मिलता है, उनमें मुख्य इस प्रकार हैं–

चिन्तामणि – श्रृंगार मंजरी, कविकुलकल्पतरु
कुलपतिमिश्र – रस रहस्य
भिखारीदास – काव्यनिर्णय
सोमनाथ – रसपीयूष निधि
सुखदेवमिश्र – पिगल
ग्वाल – अलंकार भ्रमभंजन

उपरोक्त गद्यकारों के इलावा कुछ लक्षण–ग्रंथकारों यथा– चिन्तामणि, कुलपति, सोमनाथ आदि ने लक्षणों की व्याख्या के लिए अलग से गद्य–शैली का भी प्रयोग किया है।
रीति काल में ब्रज में भी कई तरह के गद्य के दर्शन होते हैं। कुछ टीकाकारों ने गद्य–शैली का प्रयोग करते हुए अनेक प्रमुख ग्रंथों पर टीकाएं भी लिखीं हैं। इन टीकाकारों में गोपेश्वर, ईसवी खां, सुरति मिश्र, जनमुआल, नाजरआनन्दराम, स्वामी नवरंग, प्रियादास आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इस काल में भगवतगीता भाषा, रामानुजी भगवान दास की गीता भाषामृतम, प्रिया दास की सुलोचना टीका उल्लेखनीय हैं। इसके साथ ही इस काल में तुलसीदास के काव्य, बिहारी सतसई, केशव की रसिकप्रिया आदि पर अनेक टीकाएं लिखीं गईं। इनमें राजा रतन सिंह की विनयपत्रिका टीका, हरिहर प्रसाद की गीतावली टीका, सुरति मिश्र की रसिक प्रिया, रसग्राहक चन्द्रिका टीका आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।3
इस काल में ब्रज भाषा के गद्य का क्या स्वरूप था, उसे जानने के लिए एक उदाहरण से यह प्रमाणित हो जाता है कि उस समय गद्य अपनी प्रारम्भिक अवस्था में था तथा ब्रज में बहुत साधारण रूप गद्य का देखने को मिलता है। चौरासी वैष्णवन की भावना वार्ता जो टिप्पणीकार श्री हरिराय से उद्धृत है, इसमें ब्रज–गद्य क प्रारम्भिक रूप को देखा जा सकता है–
तादिन कृष्णदास के घर कछु सीधो सामग्री न हतो और कृष्णदास घर न हते– सो वा माम में एक बनियां हतो सो या स्त्री को सुन्दर देखि कै वह बनिया कबहुं–कबहुं या स्त्री सों टोंक करे–तब वा स्त्री ने विचारी जो वा बनियां के पास जाउं से वा बनियां की हाट पर आई।

2. राजस्थानी भाषा में रचित गद्य–साहित्य–

इस काल में जितना गद्य साहित्य राजस्थानी भाषा में रचा गया उतना ब्रजभाषा में भी नहीं रचा गया। ब्रज भाषा के गद्य में रचे साहित्य की तरह राजस्थानी भाषा में भी गद्य में अनेक रूपों में गद्य की रचना हुई। वात, वार्ता, वचनिका, वर्णन दवावैत, सलोका, पत्र, वंशावली, पट्टावली, विगत, पीढ़ी आदि में गद्य का सुन्दर उपयोग हुआ है। इनमें कुछ रचनाएं इतिहास विषयक हैं तथा ललित–विद्या के रूप में स्वीकार की गईं हैं। राजस्थानी इन गद्य रचनाओं के मुख्य विषय– इतिहास, धर्म, ज्योतिष, वैद्यक, नीति गणित, शकुन–अपशकुन, सामुद्रिक,
आदि हैं। राजस्थानी साहित्य में वात साहित्य प्रमुख है। यह विधा आधुनिक कहानी की ही तरह है। 4 राजस्थानी साहित्य में रीति कालीन वार्ता–साहित्य केवल पद्यमय व गद्यमय रूप में प्राप्त होता हैं। विभिन्न विषयों पर आधारित राजस्थानी गद्य में वात –साहित्य अनेक वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–
क. प्रेमपरक ख वीरतापरक ग हास्यपरक घ शान्तरस परक च स्त्रीचातुर्य–विषयक और अद्भुत तत्व पूर्ण वात साहित्य

राजस्थानी साहित्य की रीतिकालीन गद्यरचनाएं–

इस भाषा में वातसाहित्य की अनेक प्रमुख रचनाएं है। रतना हम्मीर री वात, गोरा–बादली री वात, ढोला मावाणी री वात, वीरबल री वात, राजा भोज खापरा चोररी वात आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है।
रीति कालीन राजस्थानी गद्य साहित्य के अन्तर्गत वचनिका शीर्षक से दो ही गद्यरचनाओं का पता चलता हैं–खिडिया जगा कृत राठौड, रत्न सिह कृत महेस दासौत री वचनिका तथा मेडतावासी वृंद कृत वचनिका स्थान किशन गढ। इसके अतिरिक्त कुछ वर्णनपरक गद्य रचनाएं भी राजस्थानी गद्य साहित्य की अमूल्य निधि हैं। अन्य ललित गद्य रचनाओं में दलपति विलास, रामदेव महाराज रौ सिलौका, बांकी दास री ख्यात, उदयपुरी री ख्यात, बीकानेर री ख्यात आदि का नाम लिया जा सकता है।कुद गद्य रचनाएं राजस्थानी में इतिहास से संबन्धित हैं–कछवाहां री वंसावली, सीसोदिया री वंसावली आदि प्रमुख रूप से गिनाई जा सकतीं हैं। इसी काल में इसी भाषा में कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों की टीकाएं भी लिखी गईं हैं जिनमें भागवत टीका, रसिक प्रिया टीका आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त पंचतन्त्र की कहानियों, भागवत, गरुडपुराण आदि का राजस्थानी भाषा में गद्य–शैली में अनुवाद भी हुआ। एक अन्य रचना नैणसी री ख्यात जिसके लेखक मुहणोत नैणसी ने राजस्थान के गांवों के साथ साथ राजस्थान की राजपूत जातियों का भी विवरण दिया है।5 राजस्थानी गद्य–शैली का एक उदाहरण प्रस्तुत है–
तिणरा मुख री ओपमा तो पूरण चन्द्रमा ही न पावैं कहां कण ताई दीठा हीज वण आवैं नैण जी के अमृतरा हीज नैण। वैण जि को कोयल रो हीन वैण। धनुष ज्यूहीं मुहां राखंचचं नासिका जिका सुवा री चुंच। अधर प्रवाली जिसा वणियां। दात जाणो हीरा री कणियां।
उपरोक्त नमूना राजस्थानी गद्य का है, इसके प्रारम्भ में ब्रज की तरह राजस्थानी गद्य में भी उतना परिष्कृत रूप दिखाई नहीं देता। कालान्तर में कुछ अच्छे गद्य का स्वरूप अवश्य मिलता है।

3. दक्खिनी हिन्दी में रचित गद्य–साहित्य–

वस्तुतः रातिकाल से बहुत पहले ही दक्षिण भारत में प्रचलित दक्खिनी हिन्दी में अनेक गद्य रचनाएं हुई। इन रचनाओं में इस्लाम धर्म ग्रंथों की अनूदित रचनाओं, पत्रों, हुकमनामों, अर्जियों, आदि का उललेख किया जा सकता हें इनमें कंजल मोमिणन, जिसके रचनाकार आबिद अलहसन उलहूसेनी, मीरां याकूब द्वारारचित शमायतुल अतकिया, दलायलुल अतकिया, यररहबुरीहबुदीन कादिरी कृत रिसाले वजूदिया आदि प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त अन्य प्रसिद्ध दक्खिनी हिन्दी की रचनाओं में तूतीनामा, अनवारेसुहेली, किस्से गुलो हुरमुज, हैदरनामा तारीखजापान, आंदतुल तारीख, तारीख श्री रंगपटटन, मजमूआ नुस्खे जात आदि विशेष प्रसिद्ध हैं।6

4. खडी बोली में रचित गद्यसाहित्य–

इस काल में रचित खडी बोली गद्य की रचनाएं ब्रज–खडी बोली मिश्रित हैं। इसके अतिरिक्त खडी बोली के गद्य में प्रयुक्त भाषा में पूर्वी हिन्दी, राजस्थनी, पंजाबी, आदि भाषाओं के शब्दों का भी खूब प्रयोग हुआ है। इनको हम चार वर्गों में बांट सकते हैं–
1 अनूदित रचनाएं 2 टिप्पणी व टीकाएं 3. फोर्ट विलियम्स कॉलेज द्वारा प्रकाशित रचनाएं 4 अन्य रचनाएं

1. अनूदित रचनाएं–

इतिहास प्रमाण है कि अनेक लेखकों ने प्रसिद्ध रचनाओं का खड़ी बोली में गद्य–शैली में अनुवाद कियां इन अनुवादकों ने प्रायः भाषा उपनिषद, भाषा योग वशिष्ट, भाषा पद्म पुराण, आदि पुराण वचनिका आदि ग्रंथों का अनुवाद कियां अन्य अनूदित रचनाएं इस प्रकार हैं–कृपाराम– पारस भाग मूल ग्रंथ– कीमिया शआदत, बीरबल–गीतानुवाद मूल ग्रंथ– गीता, पं कामोदानन्दमिश्र– सूर्य सिद्धान्त मूल ग्रंथ– अज्ञात, दौलत राम– हरि वंश पुराण वचनिका मूल ग्रंथ– हरिवंश पुराण।

2. टिप्पणी और टीकाएं–

पंडित हेमराज– पंचास्तिकाय टीका, प्रवचन सार टीका,
अख्यराज– विषाद हर स्त्रोत टीका

भगवान दास – भाषामृत–गीता टीका,
दयाल अनेमी – अष्टावक्र गीता टीका
आनन्दवन – जपु टीका
ईसवी खां – बिहारी सतसई टीका

3. फोर्ट विलियम्स कॉलेज द्वारा प्रकाशित रचनाएं–

फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही हो गई थी। अंग्रेज अधिकारियों को खडी बोली से परिचित कराने के लिए खडी बोली की अनेक गद्य रचनाओं का निर्माण एवं अनुवाद हुआ। इनमें प्रमुख ग्रंथों का अनुवाद या उनकी टीका की गई हैं। श्री लल्लू लाल का प्रेमसागर, सदल मिश्र का रामचरित्र, नासिकेतोपाख्यान, लाल चन्द्रिका टीका, भाषा कायदा आदि प्रमुख हैं।7

4. अन्य रचनाएं–

अन्य प्रमुख रचनाओं में इस काल में खड़ी बोली के गद्य साहित्य की अनेक रचनाएं हैं जिनमें एकादशी महिम, बाजनामा, लखपत दवावैत, सुरासुर निर्णय, मोक्षमार्गप्रकाश, पोथी हरि जी, जनमसाष कबीर भगत जी की, जनम साषी गुरु नानक जी दी आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। रीति कालीन खडी बोली का एक उदाहरण देखिए–

नायिका है तो प्रिय की सुहागिन पैह इसकी जो सखी हे, सो इसके सुहाग को नजर लगने के वास्ते छिपावै है।

5. अन्य उपभाषाओं,बोलियों में रचित गद्य साहित्य–

अन्य उपभाषाओं यथा– अवधी, मैथिल, भोजपुरी आदि में भी गद्य–साहित्य का निर्माण हुआा। भोजपुरी में गद्य साहित्य के अन्तर्गत– कुछ पत्र, दस्तावेज, सनद, पंचनाम आदि ही प्राप्त होते हें। इस काल में अवधी भाषा में रचित गद्यसाहित्य में जो रचनाएं प्राप्त होतीं हें उनमें अधिकांशतः अनूदित रचनाएं, टीकाएं ही हैं। ऐसी रचनाओं में भानु मिश्र की रस विनोद, रामचरण दास की मानस टीकागौतम ऋृषि की सगुना वती, प्रिया दास कृत व्यवहार पद आदि का नाम उल्लेखनीय है।8

संदर्भ सूचि–

1. डॉ. नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. 77
2. डॉ. हरीश चन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य का आदिकाल पृ. 69
3. आचार्य चतुरसेन शास्त्री इतिहास ग्रन्थ पृ. 56
4. शिवदान सिंह चौहान हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष पृ.
5. डॉ. भोलानाथ तिवारी हिन्दी साहित्य पृ. 76
6. शिवदान सिंह चौहान हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष पृ. 87
7. डॉ. राम खिलावन पाण्डे हिन्दी साहित्य का नया इतिहास पृ. 56
8. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास पृ. 78